ये अव्यक्त इशारे

कर्मयोगी बनो

15-06-2024

कर्मयोगी का हर कर्म चरित्र के समान गायन योग्य होता है। हर कर्म की महिमा कीर्तन करने योग्य होती है। जैसे भक्त लोग कीर्तन में वर्णन करते हैं कि इनका देखना अलौकिक, चलना अलौकिक, हर कार्य इन्द्रियों की महिमा अपरमपार करते रहते हैं, ऐसे हर कर्म महान अर्थात् महिमा योग्य हो। हर कर्म त्रिकालदर्शी बन करने से कभी भी कोई कर्म विकर्म नहीं हो सकता, सदा सुकर्म होता है।

Be a karma yogi.

Every action of a karma yogi is like a divine activity, worthy to be remembered and praised. The praise of every action is worthy to be sung. Just as devotees sing in their praise that their way of seeing is alokik, their way of moving is alokik, the praise for every physical organ is limitless and alokik, similarly every action is great, that is, it is worthy of praise. By performing every action while being trikaldarshi, none of your actions will be sinful, they will always be pure actions.